Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

भारत का भूगोल

(बिहार के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: BRPM08

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

भारत का भूगोल

(बिहार के विशेष संदर्भ सहित)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 011-47532596, 87501 87501

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

BPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. भारत: भौगोलिक अवस्थिति एवं भौतिक स्वरूप **5–22**
- 1.1 भौगोलिक अवस्थिति 5
- 1.2 भूगर्भिक संरचना 11
- 1.3 पर्वत 15
- 1.4 पठार 16
- 1.5 मैदान 17
- 1.6 झीलें 17
- 1.7 हिमनद 19

2. भारत के भू-आकृतिक प्रदेश **23–48**
- 2.1 उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी हिमालय 23
- 2.2 उत्तरी भारत का विशाल मैदान 33
- 2.3 प्रायद्वीपीय पठार 36
- 2.4 दक्षिणी पर्वतीय क्षेत्र 41
- 2.5 तटीय मैदान 42
- 2.6 भारत के द्वीप समूह 43

3. अपवाह तंत्र **49–66**
- 3.1 भारत का अपवाह तंत्र 49
- 3.2 भारत के अपवाह तंत्र का वर्गीकरण 52

4. जलवायु **67–80**
- 4.1 मानसून की उत्पत्ति 69
- 4.2 ऋतुओं के अनुसार जलवायु दशाएँ 72
- 4.3 वर्षा का वितरण 73
- 4.4 भारत के जलवायु प्रदेश 75

5. भारत की मृदाएँ एवं प्राकृतिक वनस्पतियाँ **81–104**
- 5.1 भारत की मृदा 81
- 5.2 मृदा क्षरण, उसकी समस्याएँ तथा संरक्षण 85
- 5.3 प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं उसके प्रकार 89
- 5.4 प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण 99
- 5.5 सामाजिक वानिकी 100

6. कृषि एवं कृषि आधारित गतिविधियाँ **105–130**
6.1 कृषि के प्रकार 105
6.2 मिश्रित कृषि : बागवानी, मुर्गीपालन, डेयरी, मत्स्य एवं पशुपालन 107
6.3 भारत की प्रमुख फसलें, बीज एवं सिंचाई व्यवस्था 110
6.4 हरित क्रांति एवं प्रमुख बहु-उद्देशीय परियोजनाएँ 123

7. खनिज एवं ऊर्जा संसाधन **131–155**
7.1 खनिज संसाधन 131
7.2 ऊर्जा संसाधन 139

8. भारत के प्रमुख उद्योग **156–183**
8.1 भारत में औद्योगिक विकास 156
8.2 भारत के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश 177

9. भारत में परिवहन **184–200**
9.1 सड़क परिवहन 184
9.2 रेल परिवहन 189
9.3 वायु परिवहन 192
9.4 जलमार्ग परिवहन 194
9.5 प्रमुख बंदरगाह 196

10. जनांकिकीय व्यवस्था **201–220**
10.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ 201
10.2 बढ़ती जनसंख्या को रोकने हेतु सरकारी नीति 203
10.3 भारत की जनगणना, 2011 205
10.4 शब्दावली 217

अध्याय
1

भारत: भौगोलिक अवस्थिति एवं भौतिक स्वरूप (India: Geographical Location and Physical Nature)

भारत एक विशाल देश है। इसका क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. है जो विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 2.4% है। भारत विश्व का सातवाँ सर्वाधिक बड़ा देश है। भारत विभिन्न भौतिक स्वरूपों में बँटा हुआ है– पर्वत, पठार, मैदान, झीलें इत्यादि भारत के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। कर्क रेखा भारत के ठीक मध्य से होकर गुज़रती है। भारत के संपूर्ण क्षेत्रफल का 10.7% भू-भाग पर्वतीय, 18.6% भू-भाग पहाड़ी, 27.7% भू-भाग पठारी एवं 43% भू-भाग मैदानी है।

1.1 भौगोलिक अवस्थिति *(Geographical Location)*

- भारत का कुल क्षेत्रफल लगभग 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है।
- भारत की आकृति लगभग चतुष्कोणीय है। इसका उत्तर-दक्षिण में अधिकतम विस्तार 3,214 किलोमीटर तथा पूर्व-पश्चिम में अधिकतम विस्तार **2,933 किलोमीटर** है।
- मुख्य भूमि, **अंडमान-निकोबार** द्वीप समूह तथा **लक्षद्वीप समूह सहित** भारत के तट रेखा की कुल लंबाई लगभग **7,516.6 किलोमीटर** है।
- भारत की स्थलीय सीमा की लंबाई 15106.7 किमी. (अन्य स्रोतों में 15,200 किमी.) है।
- भारत पूरी तरह से उत्तर-पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। यह 8º4' उत्तरी अक्षांश से 37º6' उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 68º7' पूर्वी देशांतर से 97º25' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है।
- भारत की मुख्य भूमि उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैली हुई है।
- भारत के उत्तर-पश्चिम, उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर नवीनतम मोड़दार पर्वतों का विस्तार पाया जाता है, जबकि दक्षिण में प्रायद्वीपीय क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। भारत का प्रायद्वीपीय भू-भाग उत्तर में अधिक चौड़ा तथा 22º उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की ओर सँकरा होता गया है।

> - 1 फैदम = 6 फुट
> - 1 मानक मील = 1.584 किमी.
> - 1 समुद्री मील = 1.824 किमी.

- हिमालय पर्वतमाला द्वारा भारतीय प्रायद्वीप की मुख्य भूमि को एशिया से अलग किया जाता है। भारत, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा हुआ है।
- भारत की मुख्य भूमि से दूर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में स्थित दक्षिणतम बिंदु **'इंदिरा पॉइंट'** अथवा **पिगमेलियन पॉइंट** (ग्रेट निकोबार द्वीप) तथा भारत का सबसे उत्तरी बिंदु 'इंदिरा कॉल' (जम्मू-कश्मीर) है। भारत का सबसे पूर्वी बिंदु **'किबीथु'** अंजा जिलें' में (अरुणाचल प्रदेश) तथा पश्चिमी **बिंदु 'गुहार मोती'** (कच्छ ज़िला, गुजरात) है।
- भारत में कुल 29 राज्य तथा 7 केंद्रशासित प्रदेश हैं, जिन्हें मुख्य रूप में 6 अंचलों (Zones) में बाँटा गया है–

अंचल	सम्मिलित राज्य/केंद्र शासित प्रदेश
पूर्वी अंचल (East Zone)	बिहार, **ओडिशा**, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल
पश्चिमी अंचल (West Zone)	**राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन** एवं **दीव** तथा दादरा एवं नागर हवेली
उत्तरी अंचल (North Zone)	जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा चंडीगढ़
दक्षिणी अंचल (South Zone)	**आंध्र प्रदेश**, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना, लक्षद्वीप, **अंडमान एवं निकोबार** द्वीप समूह तथा पुदुच्चेरी

हिमालय के प्रमुख हिमनद					
नाम	लंबाई (किमी.)	अवस्थिति	नाम	लंबाई (किमी.)	अवस्थिति
सियाचिन	75	काराकोरम	रिमो	40	कश्मीर
सासैनी/सासाइनी	68	काराकोरम	पुन्माह	27	कश्मीर
हिस्पर	61	काराकोरम	रूपल	16	कश्मीर
बियाफो	60	काराकोरम	जेमू	25	कंचनजंगा
बाल्टोरो	58	काराकोरम	सोनापानी	11	कश्मीर
बातुरा	58	काराकोरम	गंगोत्री	26	कुमाऊँ/उत्तराखंड
चोगोलुँग्मा	50	काराकोरम	मिलाम	19	कुमाऊँ/उत्तराखंड
खुर्दोपिन	41	काराकोरम	चोराबाड़ी	7	उत्तराखंड

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अरावली पर्वत विश्व के सर्वाधिक प्राचीन पर्वतों में से एक है।
- भारतीय भूगर्भिक संरचना का विकास अंगारालैंड तथा गोंडवानालैंड के विभाजन से शुरू हुआ।
- गोंडवाना संरचना में कोयला का विकास हुआ है। भारत के 98% कोयला गोंडवाना प्रकार का है।
- भारत, उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, उत्तर में चीन, नेपाल और भूटान तथा पूर्व में म्याँमार व बांग्लादेश से घिरा हुआ है।
- भारत के पड़ोसी देशों में बांग्लादेश की सीमा सर्वाधिक (4096.7 किमी. लंबाई) है।
- बेसाल्ट चट्टानों के अपरदन एवं अपक्षय से काली मृदा का सर्वाधिक विकास हुआ है।
- भारत में सर्वाधिक खनिज संसाधनों का विकास धारवाड़ तंत्र में हुआ है।
- भारत के अरावली, विंध्याचल, सतपुड़ा, महादेव, पारसनाथ इत्यादि अवशिष्ट पर्वत हैं।
- छोटानागपुर के पठार का विस्तार झारखंड, ओडिशा, बिहार एवं छत्तीसगढ़ में विस्तृत है।
- भारत का विशाल मैदान सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है।
- भारत में अधिकांश झीलें पर्वतीय प्रदेश में पाई जाती हैं।
- शांत ज्वालामुखियों के शीर्ष पर जल भर जाने के कारण क्रेटर झीलों का निर्माण होता है।
- पर्वत के आधार पर गिरिपद हिमनद का निर्माण होता है।
- भारत का सबसे बड़ा हिमनद सियाचिन हिमनद है।
- आर्कियन चट्टानों में जीवाश्म नहीं पाए जाते हैं।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के तीन बड़े राज्य राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र है।
- संरचनात्मक दृष्टि से मेघालय पठार दक्कन पठार का ही विस्तारित भाग है।
- कश्मीर घाटी की रचना एक समअभिनति से हुई है। जबकि गंगा मैदान की रचना एक अग्रगर्त में हुई।
- भारत तथा पाकिस्तान के मध्य सीमा-रेखा एक अध्यारोपित सीमा का उदाहरण है।
- गोंडवाना लैंड के टूटने का क्रम जुरेसिक युग में प्रारंभ होना माना जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. क्षेत्रफल के क्रम में भारत के तीन बड़े राज्य हैं? **53–55वीं, 48–52वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र
   (b) मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र
   (c) महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश
   (d) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान
2. भारत में भू-आकारों की रचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर मनन कीजिये – **47वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   1. संरचनात्मक दृष्टि से मेघालय पठार दक्कन पठार (Deccan Plateau) का ही विस्तारित भाग है।
   2. कश्मीर घाटी की रचना एक समअभिनति (Synclinorium) से हुई है।
   3. गंगा मैदान की रचना एक अग्र गर्त (Fore deep) में हुई।
   4. हिमालय की उत्पत्ति भारतीय प्लेट, यूरोपीय प्लेट तथा चीनी प्लेट के त्रिकोणीय अभिसरण के फलस्वरूप हुई।

   इन कथनों में से कौन-से सही हैं?
   (a) 1, 2 तथा 3 (b) 1, 3 तथा 4
   (c) 1 तथा 3 (d) 2 तथा 4
3. भारत अवस्थित है– **46वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' उत्तर तथा देशांतर 68°7' प. से 97°25' पू. के मध्य
   (b) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' उत्तर तथा देशांतर 68°7' पू. से 97°25' प. के मध्य
   (c) अक्षांश 8°4' उत्तर से 37°6' उत्तर तथा देशांतर 68°7' पू. से 97°25' पू. के मध्य
   (d) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' उत्तर तथा देशांतर 68°7' प. से 97°25' प. के मध्य
4. किस राज्य की अन्य देशों से भौगोलिक सीमाएँ नहीं जुड़ी हुई हैं? **46वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) राजस्थान (b) पंजाब
   (c) बिहार (d) हरियाणा
5. भारतीय प्रामाणिक समय (I.S.T) एवं ग्रीनविच माध्य समय (G.M.T) में अंतर पाया जाता है– **45वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) + 4 1/2 घंटे (b) + 5 1/2 घंटे
   (c) – 5 1/2 घंटे (d) – 4 1/2 घंटे
6. असम कुल मिलाकर कितने राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों से घिरा हुआ है? **45वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) 6 (b) 7
   (c) 8 (d) 9
7. राजस्थान की राजधानी कौन-सी है? **45वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) जयपुर (b) उदयपुर
   (c) जोधपुर (d) अजमेर
8. गुजरात की राजधानी कौन-सी है? **45वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) गोधरा (b) बड़ौदा
   (c) गांधीनगर (d) अहमदाबाद
9. दिल्ली है– **42वीं, B.P.S.C. (Pre)**
   (a) एक राज्य
   (b) एक केंद्रशासित प्रदेश
   (c) एक स्वायत्तशासी परिषद
   (d) इनमें से कोई नहीं
10. भारत विस्तृत है– **39वीं, B.P.S.C. (Pre)**
    (a) 37°17' 53" उत्तर तथा 8°6' 28" दक्षिण के बीच
    (b) 37°17' 53" उत्तर तथा 8°4' 28" दक्षिण के बीच
    (c) 37°17' 53" उत्तर तथा 8° 28" दक्षिण के बीच
    (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
11. कौन-सा राज्य उत्तर-पूर्वी राज्यों की 'सात बहनों' का भाग नहीं है?
    (a) मेघालय (b) पश्चिम बंगाल
    (c) अरुणाचल प्रदेश (d) त्रिपुरा
12. नेपाल के पड़ोसी भारतीय राज्यों का युग्म है–
    (a) सिक्किम – भूटान
    (b) सिक्किम – बिहार
    (c) असम – बिहार
    (d) उत्तर प्रदेश – हरियाणा
13. भारत का सुदूरस्थ दक्षिण बिंदु है–
    (a) कन्याकुमारी पर
    (b) रामेश्वरम् पर
    (c) इंदिरा पॉइंट पर
    (d) पॉइंट कॉलीमेर पर

14. भारत तथा पाकिस्तान के मध्य सीमा-रेखा एक उदाहरण है–
(a) अध्यारोपित सीमा का (b) अवशिष्ट सीमा का
(c) पूर्ववर्ती सीमा का (d) परवर्ती सीमा का

15. निम्नलिखित राज्यों में से कौन-से उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती हैं?
(i) पंजाब (ii) राजस्थान
(iii) छत्तीसगढ़ (iv) झारखंड
नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
(a) (i), (ii), (iii) और (iv)
(b) (ii), (iii) और (iv)
(c) (i) और (iv)
(d) (i) और (iii)

16. गोंडवानालैंड के टूटने का क्रम प्रारंभ हुआ–
(a) परमियन युग में (b) जुरेसिक युग में
(c) क्रिटेशियस युग में (d) ट्रियासिक युग में

17. भारत के दक्कन के पठार पर बेसाल्ट निर्मित लावा शैलों का निर्माण हुआ है–
(a) क्रिटेशियस युग में
(b) प्लीस्टोसीन युग में
(c) कार्बोनीफेरस युग में
(d) मायोसीन युग में

18. भारतीय उपमहाद्वीप मूलतः एक विशाल भूखंड का भाग था जिसे कहते हैं–
(a) जुरेसिक भूखंड (b) आर्यावर्त
(c) इंडियाना (c) गोंडवानालैंड

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (c)	4. (d)	5. (b)	6. (b)	7. (a)	8. (c)	9. (b)	10. (d)
11. (b)	12. (b)	13. (c)	14. (a)	15. (b)	16. (b)	17. (a)	18. (d)		

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. भारत में धारवाड़ संरचना की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। यह कुडप्पा से किस प्रकार भिन्न है?

2. भारत में कितने प्रकार की झीलें पाई जाती हैं? सोदाहरण बताइए।

अध्याय
2

भारत के भू-आकृतिक प्रदेश (Physiographic Regions of India)

भारतीय उपमहाद्वीप उच्चावच के दृष्टिकोण से विभिन्न स्थलाकृतियों का अनोखा सम्मिश्रण है। ये सभी उच्चावच भिन्न-भिन्न समयांतरालों पर हुए भूगर्भिक हलचलों व बाह्य कारकों के सम्मिलित परिणाम हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप की वर्तमान भू-वैज्ञानिक संरचना व इसके क्रियाशील भू-आकृतिक प्रक्रम मुख्यत: अंतर्जनित व बहिर्जनिक बलों तथा प्लेट के क्षैतिज संचरण की अंत:क्रिया के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आए हैं। भू-वैज्ञानिक संरचना व शैल समूह की भिन्नता के आधार पर भारत को तीन भू-वैज्ञानिक खंडों में विभाजित किया जाता है, जो भौतिक लक्षणों पर आधारित हैं–

- प्रायद्वीपीय खंड
- हिमालय और अन्य अतिरिक्त प्रायद्वीपीय पर्वतमालाएँ
- सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान

किसी स्थान की भू-वैज्ञानिक संरचना, प्रक्रिया और विकास की अवस्था का परिणाम है। भारत में धरातलीय विभिन्नताएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं जिसके आधार पर भारत को निम्नलिखित भौगोलिक आकृतियों में विभाजित किया जाता है–

- उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी हिमालय
- उत्तर भारत का विशाल मैदान
- भारतीय मरुस्थल
- प्रायद्वीपीय पठार
- तटीय मैदान
- भारत के द्वीप समूह

2.1 उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी हिमालय *(Northern and North-Eastern Himalayas)*

यह उत्तर-पश्चिम में जम्मू-कश्मीर से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक लगभग 2,500 किलोमीटर की लंबाई में फैला हुआ है। इसकी रचना टर्शियरी काल के अल्पाइन भूसंचलन के कारण हुई है। पूर्व की अपेक्षा पश्चिमी भाग अधिक चौड़ा है, जो पश्चिम में लगभग 400 किलोमीटर तथा पूर्व में लगभग 160 किलोमीटर तक चौड़ा है। इसका प्रमुख कारण पूर्व में अभिसारी सीमांत पर दबाव बल का अधिक होना है। पूर्व में दबाव बल के अधिक होने के कारण पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अधिक ऊँचे हैं। यही कारण है कि **'माउंट एवरेस्ट'** और **'कंचनजंगा'** जैसी ऊँची पर्वत चोटियाँ पूर्वी हिमालय में ही विद्यमान हैं। इसके साथ ही, हिमालय की श्रेणियाँ भारत की ओर उत्तल तथा तिब्बत की ओर अवतल हो गई हैं। प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार, हिमालय की उत्पत्ति यूरेशियन प्लेट और भारतीय प्लेट के आपस में टकराने तथा इन दोनों प्लेटों के बीच में स्थित 'टेथिस सागर' के अवसादों में वलन पड़ने के कारण हुई है।

उत्तर से दक्षिण की ओर फैले उत्तरी पर्वतीय प्रदेश को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है–

- ट्रांस हिमालय;
- वृहद् हिमालय या आंतरिक हिमालय;
- लघु हिमालय या मध्य हिमालय;
- शिवालिक या बाह्य हिमालय;

अध्याय
3

अपवाह तंत्र
(Drainage System)

अपवाह तंत्र से अभिप्राय नदियों के उस तंत्र से है जिससे धरातलीय जल प्रवाहित होता है। नदी अपने क्षेत्र का जल ढाल के अनुरूप बहाकर ले जाती है तथा अंत में किसी झील, सागर, खाड़ी या समुद्र में जाकर मिल जाती है। एक नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को अपवाह द्रोणी कहा जाता है। एक अपवाह द्रोणी को दूसरे से अलग करने वाली सीमा को जल विभाजक कहा जाता है। भारत में सैकड़ों छोटी-बड़ी नदियाँ हैं जो देश के विभिन्न भागों में प्रवाहित होती हैं।

3.1 भारत का अपवाह तंत्र *(Drainage System of India)*

- भारतीय अपवाह तंत्र को भिन्न-भिन्न तरीकों से विभाजित किया जा सकता है। समुद्र में जल के प्रवाह के आधार पर भारत के स्थल भाग का लगभग 75% जल का बहाव बंगाल की खाड़ी में होता है तथा शेष जल का बहाव अरब सागर में होता है।
- भारत के अपवाह तंत्र को दिल्ली रिज, अरावली पर्वत शृंखला तथा सह्याद्रि द्वारा पृथक् किया जाता है। ये शृंखलाएँ जल विभाजक का कार्य करती हैं।
- भारत के बड़े नदी तंत्रों में गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी आदि शामिल हैं जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, जबकि सिंधु, साबरमती, नर्मदा तथा ताप्ती का नदी तंत्र अरब सागर में अपवाहित होता है। भारत का अपवाह तंत्र यहाँ की स्थलाकृति पर निर्भर करता है।
- भारत का केवल कुछ प्रतिशत क्षेत्र ही अंतर्भूमि अपवाह के अंतर्गत आता है। जलक्षेत्र/बेसिन की आकृति के आधार पर भारतीय नदियों को तीन श्रेणियों में बाँटा जाता है–
  - ◆ जिन नदियों का जलागम या अपवाह क्षेत्र 20,000 वर्ग किमी. से अधिक होता है, **विशाल नदियाँ** कहलाती हैं। ऐसी 14 नदियाँ हैं जिन्हें भारी मात्रा में वर्षा जल की प्राप्ति होती है।
  - ◆ जो नदियाँ 2,000–20,000 वर्ग किमी. तक जलागम या अपवाह क्षेत्र रखती हैं, **मध्यम नदियाँ** कहलाती हैं। इस श्रेणी में 44 नदियाँ आती हैं।
  - ◆ ऐसी नदियाँ जिनका अपवाह क्षेत्र 2,000 वर्ग किमी. से कम होता है, **लघु नदियाँ** कहलाती हैं। ऐसी नदियों की संख्या सर्वाधिक है।

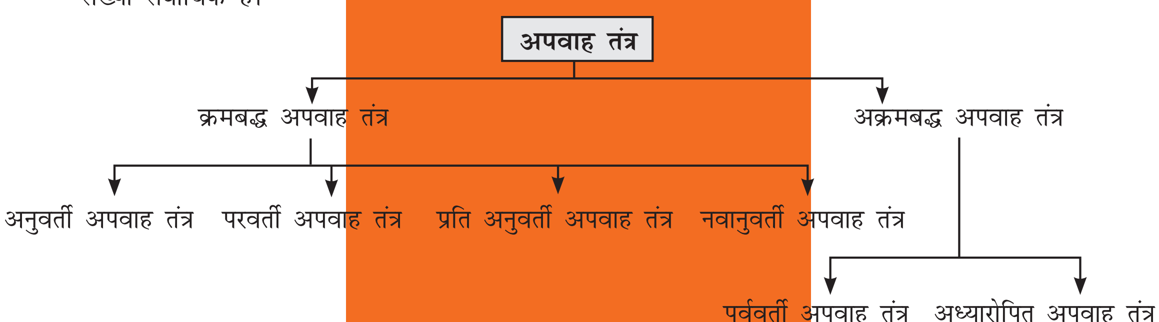

क्रमबद्ध अपवाह तंत्र *(Functional drainage system)*

ऐसी नदियाँ जो ढाल का अनुसरण करती हैं, उनसे संबंधित अपवाह तंत्र को क्रमबद्ध अपवाह तंत्र कहा जाता है। क्रमबद्ध अपवाह तंत्र के निम्नलिखित प्रकार होते हैं–

- **अनुवर्ती अपवाह तंत्र :** ढाल के अनुरूप बहने वाली नदियों को अनुवर्ती या अनुगामी अपवाह तंत्र कहते हैं। दक्षिण भारत की अधिकांश नदियाँ अनुवर्ती श्रेणी की हैं। इन नदियों का प्रवाह नमन दिशा में होता है इसलिये इन्हें **नतजल धारा** भी कहा जाता है।

अध्याय 4

जलवायु
(Climate)

किसी भी देश की जलवायु का विस्तृत अध्ययन करने के लिये उसके तापमान, वर्षा, वायुदाब तथा पवनों की गति एवं दिशा का ज्ञान होना आवश्यक होता है। जलवायु के इन विभिन्न तत्त्वों पर भारत के अक्षांशीय विस्तार, उच्चावच तथा जल व स्थल के वितरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। कर्क रेखा भारत जैसे विशाल देश को लगभग दो बराबर भागों में बाँटती है, इसलिये इसका दक्षिणी भाग उष्णकटिबंध में और उत्तरी भाग शीतोष्णकटिबंध में अवस्थित है। भारत की उत्तरी सीमा पर विशाल हिमालय पर्वत स्थित है। यह भारतीय उपमहाद्वीप को मध्य एशिया से अलग करता है और वहाँ से आने वाली शीत पवनों को रोकता है। इस प्रकार भारत के अधिकांश हिस्से में उष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है। भारत के दक्षिण में स्थित हिंद महासागर से आने वाली मानसूनी पवनों का भारत की जलवायु पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, इसलिये भारत की जलवायु को उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु कहा जाता है।

भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

कारक	प्रभाव
स्थिति एवं अक्षांशीय विस्तार	● भारत **8°4' उत्तर से 37°6' उत्तरी अक्षांशों** के मध्य स्थित है। कर्क रेखा भारत के बीच से होकर गुज़रती है। ● विषुवत् रेखा के पास होने के कारण दक्षिणी भाग में साल भर उच्च तापमान रहता है। ● भारत का उत्तरी भाग गर्म शीतोष्ण पेटी में स्थित है, इसलिये यहाँ विशेषकर शीत ऋतु में निम्न तापमान होता है।
समुद्र से दूरी	● प्रायद्वीपीय भारत अरब सागर, हिंद महासागर तथा बंगाल की खाड़ी से पूर्णत: घिरा हुआ है, इसलिये भारत के तटीय प्रदेशों की जलवायु सम रहती है। ● जो प्रदेश देश के आंतरिक भागों में स्थित हैं, वहाँ समुद्र से दूरी होने के कारण जलवायु विषम पाई जाती है।
स्थलाकृति	● भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थलाकृतिक लक्षण वहाँ के तापमान, वायुमंडलीय दाब, पवनों की दिशा तथा वर्षा की मात्रा को पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। ● भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत आर्द्रयुक्त मानसूनी पवनों को रोककर संपूर्ण उत्तरी भारत में वर्षा कराता है। ● मेघालय के पठार में पहाड़ियों की कीपनुमा आकृति होने के कारण यह क्षेत्र मानसूनी पवनों द्वारा विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्र के अंतर्गत आता है। ● अरावली पर्वत मानसूनी पवनों की दिशा के समानांतर स्थित है, इसलिये यह मानसूनी पवनों को रोक नहीं सकता है जिसके कारण राजस्थान का एक विस्तृत क्षेत्र मरुस्थल हो गया है। ● पश्चिमी घाट, दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवनों के मार्ग में दीवार के समान खड़ा है जिसके कारण इस पर्वतमाला की पश्चिमी ढालों तथा पश्चिमी तटीय मैदान में भारी वर्षा होती है। ● पश्चिमी घाट के पूर्व में वृष्टि छाया क्षेत्र हो जाने के कारण वर्षा कम होती है।
उत्तर पर्वतीय श्रेणियाँ	● ये श्रेणियाँ शीतकाल में मध्य एशिया से आने वाली अत्यधिक ठंडी व शुष्क पवनों से भारत की रक्षा करती हैं। ● ये पर्वत श्रेणियाँ दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवनों के सामने एक प्रभावी अवरोध बनाती हैं। ● ये श्रेणियाँ उपमहाद्वीप तथा मध्य एशिया के बीच जलवायु विभाजक का कार्य करती हैं।

अध्याय
5

भारत की मृदाएँ एवं प्राकृतिक वनस्पतियाँ (Soils of India and Natural Vegetations)

भारत एक विशाल देश है जहाँ विभिन्न प्रकार की मृदाएँ पाई जाती हैं। मृदा हमारे जीवन के लिये बहुत ही मूल्यवान तत्त्व है जो हमें प्रकृति से प्राप्त हुई है। मृदा से हमें वनस्पति तथा कृषि उत्पाद प्राप्त होते हैं। मृदा की उपजाऊ शक्ति तथा उसकी गहराई पर किसी भी क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्था निर्भर करती है। भारत में मृदाओं का स्वरूप एक जैसा नहीं है। इसका मुख्य कारण यहाँ की स्थलाकृति, वनस्पति व जलवायु में भिन्नता का पाया जाना है। भारत के दक्कन क्षेत्र में काली मृदा की बहुलता है तो मध्य भारत में लाल-पीली मृदा की। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत का मृदा संगठन एक जैसा नहीं है।

5.1 भारत की मृदा *(Soil of India)*

भारतीय मृदा वर्गीकरण की दिशा में अनेक कार्य किये गए हैं। इस संदर्भ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा 1956 में किया गया कार्य सबसे महत्त्वपूर्ण है। ICAR द्वारा संरचनात्मक मृदा और खनिज, मृदा के रंग व संसाधनात्मक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए भारतीय मृदा को आठ वर्गों में विभाजित किया है-

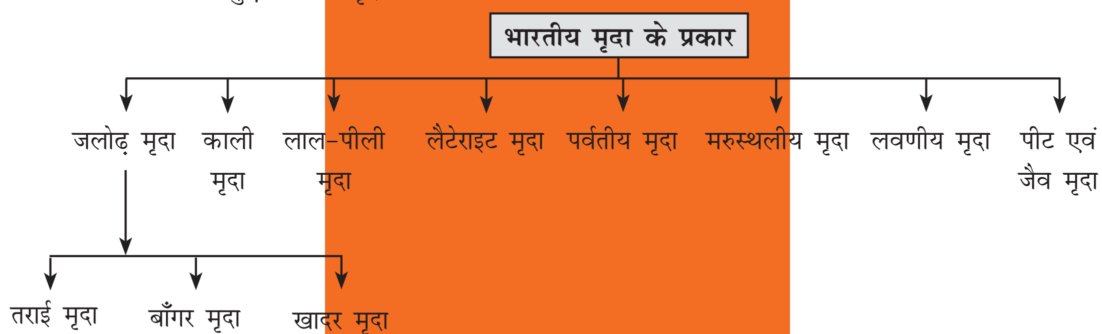

जलोढ़ मृदा *(Alluvial soil)*

- इस मृदा का विस्तार भारत के कुल क्षेत्रफल के लगभग 43.4% भाग में है।
- इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए तलछट के निक्षेपण से हुआ है। इस प्रकार यह एक अक्षेत्रीय मृदा है।
- इस मृदा के दो प्रमुख क्षेत्र हैं-
    - उत्तर का विशाल मैदान
    - तटवर्ती मैदान
- जलोढ़ मृदा नदियों की घाटियों एवं डेल्टाई भाग में भी पाई जाती है।
- इस मृदा में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं ह्यूमस की कमी होती है, परंतु इस मृदा में पोटाश एवं चूने का पर्याप्त अंश होता है।
- यह उपजाऊ मृदा होती है।
- इस मृदा को मुख्यत: तीन भागों में विभाजित किया जाता है-

तराई मृदा

- यह भारत के तराई प्रदेश में पाई जाती है। इस मृदा में महीन कंकड़, रेत, चिकनी मृदा, छोटे-छोटे पत्थर आदि पाए जाते हैं।
- बड़े-बड़े चट्टानी कणों की उपस्थिति के कारण इस मृदा की जल ग्रहण क्षमता अधिक होती है।
- इस मृदा में चूने की मात्रा अधिक पाई जाती है, जिसके कारण यह मृदा गन्ने की कृषि के लिये काफी उपयुक्त होती है।

अध्याय 6

कृषि एवं कृषि आधारित गतिविधियाँ (Agriculture and Agriculture Based Activities)

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारतीय जीवन का आधार, रोज़गार का प्रमुख स्रोत तथा विदेशी मुद्रा अर्जन करने का माध्यम होने के कारण कृषि को देश की अर्थव्यवस्था का आधार कहा जाता है। यहाँ की लगभग दो-तिहाई आबादी कृषि पर आश्रित है। भारत के कुल क्षेत्रफल के लगभग 60.4% भाग पर कृषि कार्य होता है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका के 44.63%, जापान के 12.4%, चीन के 54.8% एवं कनाडा के केवल 7.2% क्षेत्रफल पर कृषि कार्य होता है।

भारत की कृषि को प्रभावित करने वाले कारक				
भौतिक कारक	**संस्थागत कारक**	**संरचनात्मक कारक**	**राजनीतिक कारक**	**तकनीकी कारक**
इसके अंतर्गत जलवायु की दशाओं को शामिल किया जाता है, जैसे- तापमान, वर्षा, आर्द्रता, मिट्टी, उच्चावच।	संस्थागत कारक के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों को शामिल किया जाता है, जैसे- चकबंदी, बिचौलियों का अंत इत्यादि।	इसके अंतर्गत कृषि में आधुनिकता एवं उत्पादकता बढ़ाने वाले तकनीकी उपकरण, कृषि शोध एवं विज्ञान आधारित निवेश को शामिल किया जाता है।	कृषि क्षेत्र में राजनीतिक-प्रशासनिक प्रयास का योगदान हमेशा होता है, जैसे- न्यूनतम समर्थन मूल्य, ऋण प्रवाह, विपणन व भंडारण की संरचना एवं विकास इत्यादि।	वर्तमान समय में कृषि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तकनीकी कारक हैं, जैसे- कृषि उपज भंडारण, ई-चौपाल, किसान कॉल सेंटर इत्यादि से कृषि उत्पादकता को एक नया आधार मिला है।

6.1 कृषि के प्रकार *(Types of Agriculture)*

भारत एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ भिन्न-भिन्न भौगोलिक दशाएँ पाई जाती हैं। इसलिये यहाँ पर कृषि के अनेक प्रकार पाए जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

कृषि के प्रकार

- आर्द्र कृषि
- तर कृषि
- शुष्क कृषि
- सिंचित कृषि
- पहाड़ी तथा सीढ़ीदार कृषि
- झूमिंग कृषि

कृषि	
प्रकार	**प्रमुख विशेषताएँ**
आर्द्र कृषि	● इस प्रकार की कृषि काली मिट्टी वाले क्षेत्र में की जाती है। ● गंगा के मध्यवर्ती मैदान एवं मध्य प्रदेश के अधिकांश भाग में इस प्रकार की कृषि की जाती है। ● यह कृषि पद्धति अत्यधिक प्रचलित है।
तर कृषि	● इस प्रकार की कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ 200 सेमी. से अधिक वर्षा हो। ● इन क्षेत्रों में मुख्यत: दो फसलें उगाई जाती हैं। ● मुख्यत: गन्ना, धान एवं जूट की खेती की जाती है। ● मालाबार तट, मणिपुर, त्रिपुरा, असम, नगालैंड, मेघालय, पूर्वी हिमालय, दक्षिणी बंगाल आदि क्षेत्रों में इस प्रकार की कृषि की जाती है।

अध्याय 7

खनिज एवं ऊर्जा संसाधन (Mineral and Energy Resources)

भारत प्राकृतिक विविधताओं से भरा राष्ट्र है। किसी भी देश की प्राकृतिक संसाधन राष्ट्र के उन्नति का सूचक होता है, हम प्रकृति से मानवीय उपयोग के लिये कई चीजें प्राप्त करते हैं जिसमें खनिज एवं ऊर्जा संसाधनों का सर्वाधिक महत्त्व है।

7.1 खनिज संसाधन *(Mineral Resources)*

भूगर्भ से खनन कर निकाले जाने वाले भौतिक पदार्थों को खनिज कहा जाता है। खनिज वे प्राकृतिक रासायनिक तत्त्व या यौगिक हैं, जिनका निर्माण अजैव क्रियाओं द्वारा होता है, जो मुख्यत: अजैव क्रियाओं से बनते हैं। जिन स्थानों से खनिज निकाले जाते हैं, उन्हें खान कहा जाता है। संरचना के आधार पर खनिजों को निम्नलिखित प्रकार से बाँटा जाता है–

खनिज		
धात्विक		अधात्विक
लौह	अलौह	
लौह अयस्क	तांबा	हीरा
मैंगनीज़	एल्युमीनियम	संगमरमर
क्रोमियम	टिन	चूना पत्थर
निकिल	सीसा	ग्रेनाइट
कोबाल्ट	चांदी	अभ्रक
टंगस्टन	प्लेटिनम	जिप्सम
	ज़िंक	गंधक
		पाइराइट
		एस्बेस्टस

धात्विक खनिज (Metallic Minerals)

- ऐसे खनिज जिन्हें गलाने से धातु प्राप्त होती है, धात्विक खनिज कहलाते हैं।
- ये खनिज अयस्क के रूप में प्राप्त होते हैं।
- धातु लचीली होती है और उसे पीटकर किसी भी रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

लौह खनिज : इसके अंतर्गत **लौह अयस्क**, **मैंगनीज़**, **टंगस्टन**, **क्रोमियम**, **निकिल**, **बोरॉन**, **टाइटेनियम**, **वेनेडियम**, **मोलिब्डेनम**, **कोबाल्ट** आदि को शामिल किया जाता है।

अलौह खनिज : इसके अंतर्गत **तांबा**, **जस्ता**, **सीसा**, **प्लेटिनम**, **मैग्नीशियम**, **टिन**, **बॉक्साइट** इत्यादि को शामिल किया जाता है।

भारत के प्रमुख धात्विक खनिज (Major metalic mineral of India)

लौह अयस्क (Iron ore)

- भारत का लौह अयस्क के भंडार एवं उत्पादन की दृष्टि से विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- भारत में लौह अयस्क मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की धारवाड़ संरचना में पाया जाता है।
- विश्व के कुल लौह अयस्क का लगभग 3% भारत में निकाला जाता है, मांग कम होने के कारण कुल उत्पादन का लगभग 50% से भी अधिक निर्यात कर दिया जाता है।
- गोवा में उत्पादित होने वाला संपूर्ण लौह अयस्क निर्यात कर दिया जाता है।

लौह अयस्क भंडार के शीर्ष राज्य
कर्नाटक
ओडिशा
झारखंड

लौह अयस्क उत्पादक शीर्ष राज्य
ओडिशा
छत्तीसगढ़
झारखंड

लौह अयस्क की प्रमुख पेटियाँ
झारखंड-ओडिशा पेटी
मध्य प्रदेश-महाराष्ट्र पेटी
कर्नाटक-आंध्र प्रदेश पेटी
गोवा-पश्चिमी महाराष्ट्र पेटी

लौह अयस्क के प्रकार

- **मैग्नेटाइट (Fe_3O_4)**
- **हेमेटाइट (Fe_2O_3)**
- **लिमोनाइट $FeO(OH).nH_2O$**
- **सिडेराइट ($FeCO_3$)**

अध्याय

8

भारत के प्रमुख उद्योग
(India's Major Industry)

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिये औद्योगिक विकास अति आवश्यक है। कच्चे माल को निर्मित वस्तुओं में परिवर्तित करने की क्रिया को विनिर्माण उद्योग कहा जाता है। प्राचीन काल से ही भारत अपने कुटीर उद्योग, शिल्प तथा वाणिज्य उद्योग के लिये विश्व प्रसिद्ध रहा है। भारतीय मलमल, सूती एवं रेशमी वस्त्र, कलात्मक वस्तुएँ आदि की विश्व में काफी मांग थी, किंतु औद्योगिक क्रांति के पश्चात् भारतीय परंपरागत उद्योगों को काफी हानि हुई। औपनिवेशिक शासन की विनिर्मित सामान को आयात करने तथा कच्चे माल को निर्यात करने की प्रोत्साहन नीति ने भारत के परंपरागत उद्योगों की रीढ़ तोड़ दी। यह महसूस किया गया कि औद्योगिक विकास ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें आर्थिक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने में सहायता कर सकता है। परिणामस्वरूप योजनाबद्ध कार्यक्रम आरंभ किया गया और पंचवर्षीय योजनाओं में उद्योगों के विकास पर ज़्यादा ध्यान दिया जाने लगा।

एक विशाल क्षेत्र में विभिन्न उद्योगों के संकेंद्रण से विकसित औद्योगिक भू-दृश्य को औद्योगिक प्रदेश कहा जाता है। इसमें कोई आधारभूत उद्योग नहीं होता है। अधिकांशतः उद्योग स्वतंत्र अस्तित्व के होते हैं। इसमें औद्योगिक श्रमिकों के निवास के लिये कॉलोनियों और औद्योगिक सामानों के लिये कई छोटे-बड़े कस्बों का उद्भव होता है। इस क्षेत्र में आनुषंगिक इकाइयों की स्थापना से औद्योगिक संकुल का निर्माण होता है।

8.1 भारत में औद्योगिक विकास *(Industrial Development in India)*

भारत में औद्योगिक विकास के कालखंड को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) स्वतंत्रता पूर्व भारत में औद्योगिक विकास

(ii) स्वतंत्रता पश्चात् भारत में औद्योगिक विकास

स्वतंत्रता पूर्व भारत में औद्योगिक विकास

प्राचीन काल से ही भारत अपने सूती वस्त्रों, रेशमी वस्त्रों, मलमल तथा अन्य कलात्मक वस्तुओं के लिये विश्व प्रसिद्ध था लेकिन इसके बाद वर्ष 1854 में प्रथम सफल प्रयास के रूप में **कावसजी नानाभाई डाबर** द्वारा मुंबई (तत्कालीन बॉम्बे) में सूती मिल की स्थापना की गई। सन् 1855 में कोलकाता के पास 'रिशरा' में जूट मिल की स्थापना के साथ ही भारत में आधुनिक उद्योगों का प्रारंभ हुआ।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत में औद्योगिक विकास

- स्वतंत्रता के समय भारत का औद्योगिक विकास मुख्य रूप से उपभोक्ता वस्तुओं तक ही सीमित था एवं ज़्यादातर उद्योग घटती मांग, मुद्रास्फीति, पुरानी मशीनों, आधुनिकीकरण की कमी एवं कच्चे माल की कमी की समस्या से ग्रसित थे, फलतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तत्कालीन केंद्रीय उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा 6 अप्रैल, 1948 को देश की 'प्रथम औद्योगिक नीति' की घोषणा की गई।
- इस नीति के द्वारा सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के रूप में देश के उद्योगों का बँटवारा किया गया तथा एक मिश्रित एवं नियंत्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी गई।
- 30 अप्रैल, 1956 को देश में 'दूसरी औद्योगिक नीति' की घोषणा की गई। इसके तहत उद्योगों को निजी, सार्वजनिक तथा संयुक्त क्षेत्रों में विभाजित किया गया तथा अवशिष्ट उद्योगों को निजी उद्यम के लिये खुला छोड़ दिया गया।

अध्याय
9

भारत में परिवहन
(Transport in India)

किसी देश की सतत् आर्थिक संवृद्धि में बेहतर ढंग से संबद्ध परिवहन प्रणाली अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के निरंतर विकास में सुचारु परिवहन प्रणाली का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में भारत की परिवहन प्रणाली में यातायात के विभिन्न माध्यमों को शामिल किया गया है, इनमें प्रमुख हैं– सड़क परिवहन, रेल परिवहन, वायु परिवहन, तटीय नौ संचालन इत्यादि। पिछले कुछ वर्षों में परिवहन प्रणाली के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ इसकी क्षमता भी बढ़ी है। परिवहन देश की आधारिक संरचना का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है क्योंकि यह कृषि व औद्योगिक विकास के साथ सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव डालता है।

9.1 सड़क परिवहन *(Road Transport)*

देश के आर्थिक विकास के लिये सड़क परिवहन महत्त्वपूर्ण अवसंरचना है। सड़क परिवहन ने भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विकास की गति, संरचना व पद्धति को प्रभावित करता है।

- भारत में सड़क अवसंरचना का उपयोग 65% माल ढुलाई तथा 80% यात्री परिवहन में होता है।
- सड़कों के निर्माण से ग्रामीण विकास की प्रक्रिया तीव्र हुई है। कृषकों का संबंध बाज़ार से बढ़ा है, जिससे उत्पादन आधिक्य की घरेलू बाज़ार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार तक पहुँच सुनिश्चित हुई है। इससे कृषकों में व्यावसायिक प्रवृत्ति का विकास होने के कारण उनकी लाभदेयता बढ़ाने में भी सफलता मिली है।
- भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने परिवहन साधनों की गतिशीलता में वृद्धि की है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण से औद्योगिक मांग की वस्तुओं के परिवहन में कुशलता बढ़ी है।
- परिवहन के विकास के कारण लोगों में गतिशीलता बढ़ी है।
- वर्तमान में भारत में सड़कों की कुल लंबाई 56,17,812 किमी. है।
- भारत में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिये ज़िम्मेदार होता है।
- भारत में सड़कों के निम्नलिखित प्रकार हैं–

सड़कों के प्रकार

- राष्ट्रीय राजमार्ग
- प्रांतीय राजमार्ग
- ज़िला सड़कें
- ग्रामीण सड़कें

राष्ट्रीय राजमार्ग *(National highway)*

- भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 1,15,530 किमी. है।
- भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों/एक्सप्रेस वे के द्वारा लगभग 40% यातायात होता है।
- आर्थिक समीक्षा 2017–18 के अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रांतीय/राज्य राजमार्ग तथा अन्य सड़कों की लंबाई को निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है:

सड़क नेटवर्क	लंबाई
राष्ट्रीय राजमार्ग/एक्सप्रेस मार्ग	1,15,530 किमी.

अध्याय
10

जनांकिकीय व्यवस्था (Demographic System)

जनसंख्या के सांख्यिकीय और व्यवस्थित अध्ययन को 'जनांकिकीय' कहा जाता है। जनगणना से केवल स्थान विशेष में कुल कितने व्यक्ति रहते हैं, उसका पता चलता है, लेकिन जनांकिकीय के अध्ययन के आधार पर विभिन्न लैंगिक वर्गों, भौगोलिक क्षेत्रों तथा अन्य सभी तुलनात्मक क्षेत्रों में जनसंख्या को वर्गीकृत कर सकते हैं। जनांकिकीय व्यवस्था के आधार पर ही जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का पता चलता है, साथ ही भविष्य के लिये नीति बनाने में भी मदद मिलती है।

10.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ *(Characteristics of India's Demographic System)*

भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- अधिक जनसंख्या
- ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता
- उच्च जनसंख्या वृद्धि दर
- निम्न लिंगानुपात
- अधिक निर्भरता की स्थिति
- नृजातीय विविधता
- वृद्धि के परिणाम

अधिक जनसंख्या *(Excess population)*

- किसी देश की अनुकूलतम जनसंख्या उसे कहा जाता है, जो उसके अधिकतम या संपूर्ण संसाधनों का अधिक-से-अधिक दोहन कर सकने वाली न्यूनतम जनसंख्या हो।
- वैश्विक तुलनात्मक दृष्टि से भारत का क्षेत्रफल लगभग **2.4%** है, लेकिन यहाँ पर कई गुना अधिक जनसंख्या है।
- एक अनुमान के अनुसार 2025–50 के बीच भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी, क्योंकि चीन की जनसंख्या वृद्धि दर 1% है, जबकि भारत की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64% है।
- इस स्थिति में भारत की जनसंख्या 34 वर्षों में दोगुनी हो जाएगी, जबकि चीन की जनसंख्या 60 वर्षों में दोगुनी होगी।
- भारत में जनसंख्या अधिक होने के कारणों में मृत्यु-दर की तुलना में जन्म-दर का अधिक होना, कम उम्र में विवाह करने की सामाजिक मान्यता, धार्मिक अंधविश्वास, निरक्षरता की अधिकता, जनसंख्या नियंत्रण के लिये उपयुक्त वैज्ञानिक सुविधाओं का अभाव, पुत्र-प्राप्ति की प्रबल चाह आदि जैसी प्रमुख समस्याएँ हैं।

ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता *(Excess of rural population)*

- भारत में 2011 की जनगणना के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों की **आबादी 68.8%** है, जबकि 31.2% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है।
- नगरीय क्षेत्रों में कम-से-कम तीन-चौथाई लोग द्वितीयक या तृतीयक क्षेत्र पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग प्राथमिक क्षेत्रों पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पूंजी के अनुपात में लाभ की दर सबसे कम होती है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न रोज़गार सृजन करके विकास किया जा सकता है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456